'सुनीता की पहिया कुर्सी'

पाठ की समझ और उसकी प्रक्रिया

मधु रावत

एनसीएफ़ 2005 और शिक्षाविद सच्चे अर्थों में सीखने के लिए पाठ्यवस्तु के जीवन से जुड़ाव पर ज़ोर देते हैं। एनसीईआरटी द्वारा विकसित की गई किताबें इसके लिए पर्याप्त अवसर भी बनाती हुई दिखती हैं। लेकिन किताब तो फिर भी एक ज़रिया ही है अन्ततः कक्षा-कक्ष के अन्दर तो शिक्षक ही ये काम कर सकता है। प्रस्तुत आलेख में मधु रावत ने *रिमझिम* पाठ्यपुस्तक के एक पाठ 'सुनीता की पहिया कुर्सी' के माध्यम से बच्चों के बीच सार्थक संवाद, जीवन अनुभवों से जुड़ाव बनाने के अवसर और फिर उसपर आधारित रचनात्मक लेखन तक की प्रक्रिया का अनुभव साझा किया है। सं.

सन्दर्भ

भाषा अर्जित सम्पत्ति है, जो बुनियादी दक्षताओं (सुनने-बोलने, पढ़ने-लिखने) के रूप में स्कूल स्तर पर विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा सम्पन्न की जाती है। भाषा हम सिखा नहीं सकते बल्कि सीखने और समझने के लिए विविध अवसर पैदा कर सकते हैं। यह अवसर टीएलएम में, गतिविधियों में, प्रिंट रिच वातावरण, बाल साहित्य, पाठ्यपुस्तक, जीवन और परिवेश में शामिल घटनाओं और अनुभव को मौखिक एवं लिखित रूप से अभिव्यक्त करने के रूप में हम देख पाते हैं। मैंने यह महसूस किया है कि भाषा शिक्षण की प्रक्रियाओं का जितना अधिक-से-अधिक जुड़ाव बच्चों के जीवन और परिवेश से जुड़ा होगा, वह उतना ही प्रभावी व असरदार होगा, यह बात विशेषकर प्राथमिक कक्षाओं के सन्दर्भ में पूर्णत: सटीक है। जब हम किसी कक्षा में जाते हैं तो हमारा एक प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु होता है। उसे पूरा करने के लिए हमारे पास एक निश्चित समय होता है। निर्धारित समय सीमा में पाठ्यवस्तु को पूरा करने के दबाव के चलते कई बार हम यह समझ ही नहीं पाते कि भाषा सीखने-सिखाने में क्या महत्त्वपूर्ण है। क्या सिर्फ पाठ्यवस्तु को बच्चों तक पहुँचा देना काफ़ी है या इसमें कुछ और भी शामिल है। इस लेख में हम पाठ्यपुस्तक में शामिल पाठ की समझ और उसके क्रियान्वयन की बात करेंगे।

पाठ की समझ

रिमझिम प्राथमिक भाषा शिक्षण के उद्देश्यों, सीखने के प्रतिफल और भाषाई दक्षताओं को विस्तार देने के सन्दर्भ में रची बुनी पाठ्यपुस्तक है। इसमें शामिल पाठ और अभ्यास बच्चों एवं शिक्षकों को सोचने, समझने और अवलोकन करने के विविध अवसर देते हैं। ये पाठ शिक्षकों से पूर्व तैयारी की माँग करते हैं। पाठ्यपुस्तक यह शिक्षण प्रक्रिया को सुनियोजित व बेहतर ढंग से बनाने का अवसर भी देती है। इस सन्दर्भ में यह बात मुझे काफ़ी महत्त्वपूर्ण लगती है कि किसी पाठ को हम कितना समझते हैं और यह भी समझते हैं कि वह पाठ किताब में क्यों रखा गया होगा! यदि हम उस पाठ के रखे जाने का मक़सद समझ लेते हैं तो हमारी शिक्षण प्रक्रिया सुनियोजित और प्रभावी बन सकती है। जब हम कोई पाठ पढ़ाते हैं तो उसके कुछ उद्देश्य होते हैं। उसमें कुछ प्रेरणा या सीख निहित होती है।

इस सन्दर्भ में, मैं कक्षा चार की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* से 'सुनीता की पहिया कुर्सी' पाठ का ज़िक्र करना चाहूँगी।

सबसे पहले तो किताब का नाम ही बहुत रोचक लगता है– *रिमझिम।* रिमझिम शब्द स्वतः ही मन को विभोर-सा कर देता है। बच्चों से पूछो तो कहते हैं– "मैमजी, बरखा की झमझम"। आवरण पृष्ठ पर बना बारिश में भीगते बच्चों का चित्र भी आकर्षित करता है। रंगीन चित्र बच्चों में पुस्तक के अन्दर झाँकने की जिज्ञासा को बढ़ाने का साधन हैं। 'सुनीता की पहिया कुर्सी' पाठ में दिए चित्र से हमें पाठ्यवस्तु का काफ़ी हद तक अनुमान हो जाता है। जैसे, जिन बच्चों ने पहिया कुर्सी नहीं देखी, चित्र देखकर समझ जाते हैं कि ये पहिया कुर्सी है। फिर वे चित्रों के आधार पर अपनी-अपनी कल्पना और अनुमान से कहानी बुनने लगते हैं। इसका अहसास उनसे बातचीत करते हुए महसूस किया जा सकता है। उनमें पढ़ने और जानने की रुचि भी पैदा होने लगती है।

यह पाठ बच्चों के मूल्यों के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। जिससे वे समाज में एक अच्छा व्यक्तित्व बनकर उभर सकते हैं। जैसे, इस पाठ का सबसे विशिष्ट उद्‌देश्य है– बच्चों में 'संवेदना' का विकास करना। इसके अलावा आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, दूसरों के प्रति सम्मान, आपसी सहयोग की भावना, अपने काम स्वयं करने की भावना, समानता, आदि गुणों का विकास करना। ये सारी बातें हमें पाठ को पढ़कर समझ आती हैं। 'सुनीता की पहिया कुर्सी' ऐसी लड़की के साहस पर आधारित है जिसके दोनों पैर कमज़ोर हैं। उसे सहानुभूति तो ज़रा भी पसन्द नहीं है, पर दूसरों से सहयोग लेने में हिचक नहीं है। अपनी ही उम्र का मददगार दोस्त मिल भी जाता है। पाठ को दो-तीन बार पढ़ने से यह समझने में मदद मिलती है कि सीधे पाठ पर जाने से पहले की शुरुआती प्रक्रियाएँ कौन-कौन सी हो सकती हैं। यदि बातचीत करनी है तो उसके प्रश्न किस तरह



के होने चाहिए। यदि किसी खेल गतिविधि से जोड़ेंगे तो पाठ से उसका सम्बन्ध कैसे जुड़ेगा, पाठ पढ़ते समय आरोह-अवरोह का उपयोग कैसा होगा, कहाँ पर रुकना है, कहाँ पर बच्चों से चर्चा करेंगे, आदि।

शिक्षण प्रक्रिया

यहाँ पर शिक्षण योजना के सैद्धान्तिक पक्ष की नहीं बल्कि इसके व्यवहारिक पक्ष, जो हम कक्षा में करते हैं, की बात है। पाठ्यवस्तु पर जाने से पहले बच्चों के पूर्वज्ञान से अवगत होना बहुत ही ज़रूरी होता है उनके घर, परिवार, दोस्त, रिश्तेदार और पालतू जानवरों के बारे में जब हम बातचीत करते हैं वो उत्साहित होकर बताते हैं। उनकी झिझक कम होने लगती है। यहाँ पर हमें यह ध्यान रखना होता है कि वो जिस भी भाषा में या जिस भी तरह से अपनी बात को रख रहे हैं, हम उन्हें टोकें नहीं, बल्कि उनकी बातों को धैर्य से सुनें और उनको ये अहसास दिलाएँ कि हम उनकी बातों में रुचि ले रहे हैं। इससे आगे चलकर वे पाठ्यवस्तु को समझने में उत्साह से भाग लेंगे। जब हम उन्हें भयमुक्त और स्वतंत्र वातावरण देते हैं तो उनके तार्किक एवं बौद्धिक विकास में वृद्धि होती है। इस दौरान हम भी बच्चों से बहुत कुछ सीखते हैं। इसी सन्दर्भ में एक छोटी-सी बात साझा करना चाहूँगी। जब मैंने बच्चों से पूछा कि क्या आपके आसपास कोई ऐसा है जो शारीरिक रूप से असमर्थ हो? जैसे– चलने, बोलने, सुनने,

आदि में। तो बच्चों ने तपाक से कहा, जी मैमजी! डुंडी (लंगड़ी)। यह पढ़कर या सुनकर जैसा भाव आप सबके मन में आ रहा है ऐसा ही भाव मेरे मन में आया। थोड़ा-सा ग़ुस्सा भी आया। जिसकी बात बच्चे कर रहे थे वो हमारे ही स्कूल में कक्षा चार में पढ़ने वाली छात्रा थी। उसका नाम लक्ष्मी था। उसका एक पैर पोलियो के कारण बहुत कमज़ोर था जो कि चलते समय एकदम लहराता था। वो दूसरे पैर पर हाथ टिकाकर चलती थी। वो रोज़ कितनी तकलीफ़ से गुज़रती होगी, इन बच्चों को उस तकलीफ़ का कोई भी अहसास नहीं था। और इसमें इनका कोई दोष भी नहीं। यहाँ पर कमी है 'संवेदना' की, जिसका इन बच्चों में शायद अभी अभाव है। इस पाठ को पढ़कर शायद बच्चे इस सन्दर्भ में कुछ समझ बना पाएँगे। लक्ष्मी पढ़ने में बहुत अच्छी नहीं थी लेकिन उसका व्यवहार, समझ और सीखना बहुत अच्छा था। वह सबके लिए प्रेम का भाव रखती थी। परन्तु इस सबके बावजूद उसका कोई दोस्त नहीं था। बच्चे उससे क्यों दूर रहते थे मुझे समझ नहीं आया। उस समय जो मेरे मन की दशा थी या भावुकता थी या यूँ कहूँ, मैं थोड़ा आहत थी। यह सीधे-सीधे 'सुनीता की पहिया कुर्सी' पाठ से भी जुड़ता है। बच्चों में लक्ष्मी और सुनीता की मन:स्थिति का अहसास कराने के लिए एक छोटी-सी गतिविधि कराई गई। सभी बच्चों को एक साथ बिना किसी की सहायता के एक पैर बाँधकर चलने को कहा गया। वो कुछ क़दम ही चलकर लड़खड़ाकर गिर पड़े। ऐसे ही कुछ और काम करने को कहा गया, जैसे– आँखों पर पट्टी बाँधकर काम करने को कहना, कुछ सामान उठाकर लाना, एक हाथ से काम करना, आदि। इन सभी में उन्हें बहुत परेशानी हुई। इससे बच्चे यह महसूस कर पाए कि दूसरे की परिस्थिति देखने में जितनी आसान लगती है उतनी होती नहीं। फिर बच्चों के साथ बातचीत की कि कैसा लगा आपको! यदि ऐसा सचमुच हो जाए तो कैसे अपने काम करोगे, आदि। उनके जवाब में मज़ाक़ न उड़ाना, सहायता करना जैसे पहलू शामिल थे। इस चर्चा में ये बात भी शामिल रही कि लक्ष्मी हम तुम जैसी ही तो है, फिर उसके साथ अच्छा व्यवहार क्यों न किया जाए, हम दौड़ सकते हैं, कूद सकते हैं, नाच सकते हैं, लेकिन क्या लक्ष्मी का मन यह सब करने को नहीं करता होगा! ऐसे में यदि हम उसे चिढ़ाते हैं तो क्या यह अच्छी बात है! हमारी बातों से उसे तकलीफ़ होती है। वह हमसे दूर अकेले में बैठकर सबको देखती रहती है। वह हमारे साथ कोई बुरा बर्ताव भी नहीं करती तो ऐसे में उसके साथ बुरा व्यवहार करना कितना उचित है! बच्चों के चेहरे के भाव बयाँ कर रहे थे कि वे इस दिशा में कुछ सोच रहे थे। उनके चेहरे एकदम उदास थे, क्योंकि अब उन्होंने ये दर्द ख़ुद से जोड़कर देखा। उसके बाद बच्चों में परिवर्तन देखने को मिला। वे लक्ष्मी की मदद करने लगे। उसे चिढ़ाने की बजाय उसे अपने साथ शामिल करने लगे। जब कोई और लक्ष्मी को चिढ़ाता तो बच्चे आकर मुझसे कहते। इससे महसूस हो रहा था कि बच्चे संवेदनशील हो रहे हैं।

रिमझिम चार में 'बड़ों से दो बातें' पृष्ठ के अन्तर्गत तेरहवें बिन्दु, "दूसरों के प्रति ख़ासकर असमानता, क्षमता या पृष्ठभूमि के अन्तर के सन्दर्भ में बच्चों को संवेदनशील बनाना भी भाषा शिक्षण के दौरान होना चाहिए", से भी यह बात स्पष्ट होती है। इस तरह पढ़ाने के साथ-साथ उनमें मूल्यों का विकास करना भी हमारा दायित्व बन जाता है।

बच्चों के साथ पाठ पर जाने से पहले यह ज़रूरी है कि पहले हम उसे पढ़ें और देखें कि कहाँ पर किस तरह की बातचीत या गतिविधि की गुंजाइश दिखाई देती है। पाठ को पढ़ते समय पता लगता है कि सुनीता आज बहुत ख़ुश है क्योंकि उसे बाज़ार जाना है। इसके लिए वो सुबह से ही अपने सारे काम फुर्ती से कर रही थी। सुनीता चलने-फिरने के लिए पहिया कुर्सी का इस्तेमाल करती है। अपने रोज़ाना के काम करने के लिए उसने स्वयं ही कई तरीक़े निकाले हैं। हालाँकि कपड़े बदलना, जूते पहनना, आदि उसके लिए कठिन काम हैं। सुनीता तैयार होकर खाने की

मेज़ पर बैठती है और माँ से कहती है कि माँ, अचार की बोतल पकड़ाना। और माँ कहती है कि अलमारी में रखी है, ले लो। एक बार के लिए लगता है कि माँ को ऐसा नहीं करना चाहिए। क्या उन्हें नहीं पता कि सुनीता को ये सब करने में दिक़्क़त होगी। लेकिन फिर हमें समझ आता है कि माँ का ऐसा व्यवहार सुनीता के आत्मविश्वास को बढ़ाने और उसे अन्य बच्चों की ही तरह सामान्य महसूस करने के लिए बहुत ज़रूरी है। इसीलिए वह सुनीता को चीनी लेने के बहाने बाज़ार भेजती हैं ताकि उसका मनोबल बढ़ाया जाए।



पाठ में एक उदाहरण एक अन्य बच्चे का है जिसे बाक़ी के बच्चे 'छोटू-छोटू' कहकर चिढ़ा रहे हैं। मैंने बच्चों से प्रश्न पूछा कि क्या उन बच्चों का ऐसा व्यवहार सही है? बच्चों का जवाब होता है, नो मैम। यहाँ पर आवश्यकता होती है कि हम बच्चों के साथ चर्चा करें, जिससे यह अहसास पैदा हो कि किसी की कमज़ोरी पर हँसना या उसे चिढ़ाना बहुत ग़लत है। ऐसा ही जब एक छोटी बच्ची फ़रीदा सुनीता की पहिया कुर्सी को देखकर पूछती है कि तुम्हारे पास यह अजीब-सी चीज़ क्या है? तभी फ़रीदा की माँ आती है और उसे ग़ुस्से से खींचकर ले जाती है और कहती है कि इस तरह का सवाल नहीं पूछना चाहिए, अच्छा नहीं लगता! सुनीता को उनका यह व्यवहार समझ में नहीं आया। यहाँ पर बच्चों के लिए सवाल था कि क्या फ़रीदा की माँ का यह व्यवहार उचित था? बच्चे कहते हैं, जी नहीं। वो वही बात प्यार से भी समझा सकती थीं।

सुनीता जब दुकान पर पहुँचती है तो एक किलो चीनी माँगने पर दुकानदार ने चीनी की थैली उसकी गोदी में रख दी जबकि उसने चीनी लेने के लिए हाथ बढ़ाया था। सुनीता ग़ुस्से से कहती है कि मैं भी दूसरों की तरह ख़ुद अपने-आप सामान ले सकती हूँ। यहाँ पर फिर सवाल था कि सुनीता को दुकानदार का व्यवहार क्यों अच्छा नहीं लगा? बच्चों का जवाब था, हाँ, उन्होंने सुनीता के हाथ में चीनी नहीं दी इसलिए। दुकानदार के व्यवहार से सुनीता को अपनी कमज़ोरी का अहसास हुआ और उसे दुःख भी हुआ। किसी की मदद करते समय हमें यह भी ध्यान रखना होता है कि हम उसकी मदद ऐसे करें कि उसे अपनी कमज़ोरी का अहसास न हो। जब सुनीता को दुकान पर जाना था तो उसे चढ़ना था जो वो नहीं कर पा रही थी। तभी वहाँ वही लड़का, जिसे बच्चे 'छोटू' कहकर चिढ़ा रहे थे, आकर कहता है कि क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ? वो अपना नाम अमित बताता है। तब





सुनीता कहती है कि पीछे के पैडिल को पैर से दबाओगे? यहाँ पर सुनीता को अमित की मदद लेना बुरा नहीं लगा। हालाँकि आसपास बहुत-से लोग थे पर सब जल्दी में थे और किसी ने भी उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

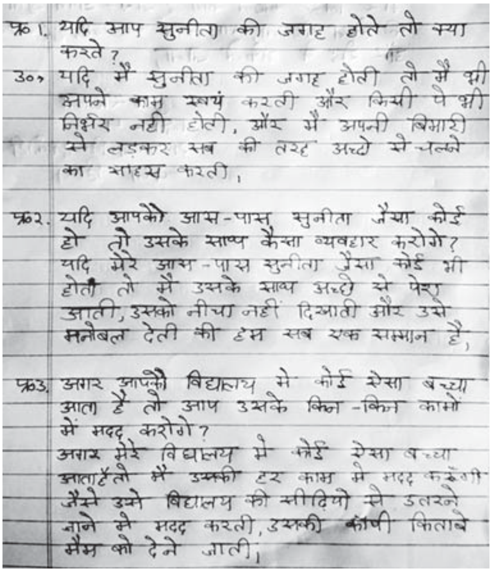
शिक्षण प्रक्रिया के दौरान इस तरह के प्रश्नोत्तर लगातार करते रहने से बच्चे पाठ्यवस्तु को समझने के लिए उत्सुक और क्रियाशील रहते हैं। बस उन्हें ये आज़ादी देनी होती है कि वो अपनी बात को अपने ढंग से और अपनी भाषा में रख पाएँ। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हम उनको देते हैं तो कई बार ऐसी चीज़ें निकलकर आती हैं जो हमें भी सीखने के मौक़े देती हैं। पाठ से सम्बन्धित गतिविधियाँ अगर हम उनके परिवेश एवं उनके अनुभवों के आधार पर करते हैं तो बच्चे ज़्यादा रुचि लेते हैं।

आकलन की तैयारी

एक आकलन तो पाठ पढ़ाने के दौरान ही होता रहता है, जैसे— बच्चों द्वारा प्रश्न करते समय, किसी बात पर अनुभव रखते या जवाब देते समय अभिव्यक्ति कौशल का आकलन। बच्चे शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कितना समझ पाए, उसका आकलन करने के लिए कुछ प्रश्न इस प्रकार से हो सकते हैं जो कि बच्चों के तार्किक एवं बौद्धिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं :

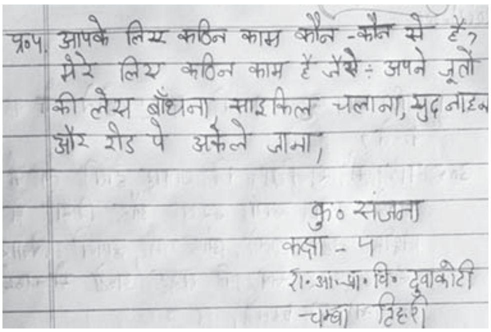
1. यदि आप सुनीता की जगह होते तो क्या करते?
2. यदि आपके आसपास सुनीता जैसा कोई हो तो उसके साथ कैसा व्यवहार करोगे?
3. अगर आपके विद्यालय में कोई ऐसा बच्चा आता है तो आप उसकी किन-किन कामों में मदद करोगे?
4. आपके लिए कठिन काम कौन-कौन से हैं?
5. सुनीता को दुकानदार का व्यवहार क्यों बुरा लगा?
6. आपके सुनीता को सड़क देखना अच्छा क्यों लगता होगा?
7. सुनीता के बारे में पढ़कर तुम्हारे मन में कई सवाल और बातें आ रही होंगी। वे बातें सुनीता को चिट्ठी लिखकर बताओ।

इन प्रश्नों पर बच्चों के जवाब कुछ इस तरह से रहे :


प्र०1. यदि आप सुनीता की जगह होते तो क्या करते?
उ०. यदि मैं सुनीता की जगह होती तो मैं भी अपने काम स्वयं करती और किसी पे भी निर्भर नहीं होती, और मैं अपनी बिमारी से लड़कर सब की तरह अच्छे से चलने का साहस करती।

प्र०2. यदि आपके आस-पास सुनीता जैसा कोई हो तो उसके साथ कैसा व्यवहार करोगे?
यदि मेरे आस-पास सुनीता जैसा कोई भी होती तो मैं उसके साथ अच्छे से पेश आती, उसको नीचा नहीं दिखाती और उसे मनोबल देती की हम सब एक समान हैं,

प्र०3. अगर आपके विद्यालय मे कोई ऐसा बच्चा आता है तो आप उसके किन-किन कामों में मदद करोगे?
अगर मेरे विद्यालय मे कोई ऐसा बच्चा आता है तो मैं उसकी हर काम मे मदद करूँगी जैसे उसे विद्यालय की सीढ़ियो से उतरने जाने मे मदद करती, उसकी कॉपी किताबे मैम को देने जाती।

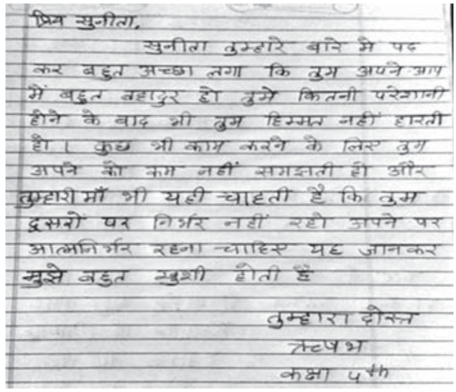

प्र०4. आपके लिए कठिन काम कौन-कौन से हैं?
मेरे लिए कठिन काम हैं जैसे: अपने जूतों की लेस बाँधना, साइकिल चलाना, मुद नाइन और रोड पे अकेले जाना,

कु० संजना
कक्षा - 5
रा० आ० प्रा० वि० दुवाकोटी
चम्बा टिहरी

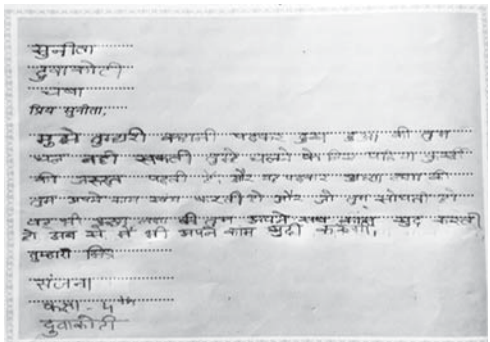
प्रतिफल

- बच्चों में मूल्यों का विकास हो पाया।
- उनमें संवेदनशीलता का गुण विकसित हो पाया है।
- सहयोग की भावना विकसित हो पाई है।
- अपने कामों को स्वयं करने के लिए प्रेरित हो पाए हैं।

और ये प्रतिफल हमें बच्चों द्वारा सुनीता के लिए लिखी गई चिट्ठियों में भी देखने को मिले हैं, जो कि निम्नवत हैं :


प्रिय सुनीता,
सुनीता तुम्हारे बारे मे पढ़ कर बहुत अच्छा लगा कि तुम अपने आप में बहुत बहादुर हो तुम्हे कितनी परेशानी होने के बाद भी तुम हिम्मत नहीं हारती हो। कुछ भी काम करने के लिए तुम अपने को कम नहीं समझती हो और तुम्हारी माँ भी यही चाहती है कि तुम दूसरो पर निर्भर नहीं रहो अपने पर आत्मनिर्भर रहना चाहिए यह जानकर मुझे बहुत खुशी होती है

तुम्हारा दोस्त
ऋषभ
कक्षा 5th


सुनीता
दुवाकोटी
चम्बा
प्रिय सुनीता,
मुझे तुम्हारी कहानी पढ़कर ...
... नहीं ...
... और ...
... करती हो और जो ...
... खुद करती
... अब से मैं भी अपने काम खुद करूँगी।
तुम्हारी मित्र
संजना
कक्षा - 5th
दुवाकोटी

एक बात जो मेरे मन को कचोटती है वह यह कि असल मायने में विकलांग कौन हैं? वो जो शारीरिक रूप से असमर्थ होने के बाद भी अपने सारे काम स्वयं करने की कोशिश करते हैं और समाज में अपना स्थान मुकम्मल रखते हैं या वे जो पूरी तरह से समर्थ होने के बावजूद भी संवेदनाओं से विकलांग होते हैं।

*लेख के सभी चित्र एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम- 4* के पाठ ‘सुनीता की पहिया कुर्सी’ सें साभार

मधु रावत को प्रारम्भिक कक्षाओं को पढ़ाने का 20 वर्ष का अनुभव है। वर्तमान में वे राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय दुवाकोटी, विकासखण्ड चंबा, टिहरी गढ़वाल में शिक्षक हैं। उन्हें कविताएँ पढ़ने और लिखने में विशेष रुचि है। बच्चों के साथ सांस्कृतिक गतिविधियाँ मसलन गीत, नृत्य, कविता और कहानी लेखन आदि करवाना अच्छा लगता है।
सम्पर्क : rawatmadhu10@gmail.com